१७ मार्च २००७, कुल पृष्ठ : ८, मूल्य : २/- आर. एन. आई. ३११०९/७७ RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

जैन
पथप्रदर्शक
ए-४, बापूनगर, जयपुर - ३०२०१५ (राज.)
नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

आत्मा में परमेश्वर होने का ही गुण है, पामर होने का गुण ही नहीं है।

ह्न दृष्टि का निधान, पृष्ठ : ६२

वर्ष : २९, अंक : २४ सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : २५१ रुपये
मार्च (द्वितीय), ०७ प्रबन्ध सम्पादक : **पं. संजीवकुमार गोधा व पं. जितेन्द्र वि. राठी** वार्षिक शुल्क : २५ रुपये

अष्टाह्निका महापर्व सानन्द सम्पन्न

१. मुम्बई : श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु समाज बृहन्मुम्बई के तत्त्वावधान में **फाल्गुन माह** के अष्टान्हिका महापर्व के अवसर पर दिनांक २४ फरवरी से ३ मार्च, २००७ तक निम्न स्थानोंपर आध्यात्मिक व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया; जिसमें ह्न

सीमंधर जिनालय में पण्डित चंदुभाईजी मेहता फतेपुर, **दादर** में पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी जैन आगरा, **घाटकोपर** में पण्डित सोनूजी शास्त्री मुम्बई, **मलाड (ई.)** में पण्डित कमलकुमारजी जबेरा, **मलाड (वे.)** में पण्डित विपिनकुमारजी शास्त्री आगरा, **बोरिवली** में पण्डित नरेन्द्रकुमारजी जैन जबलपुर, **दहीसर** में पण्डित सौरभजी शास्त्री शाहगढ़, **भायंदर** में ब्र. नन्हेलालजी जैन सागर तथा **देवलाली** में पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री व पण्डित शांतिलालजी सौगाणी महिदपुर के मार्मिक प्रवचनों द्वारा महती धर्म प्रभावना हुई।

२. दिल्ली : यहाँ अध्यात्मतीर्थ आत्म-साधना केन्द्र में श्री विमलकुमारजी जैन नीरू कैमिकल्स की ओर से इन्द्रध्वज महामण्डल विधान का आयोजन किया गया।

विधान के समस्त कार्य ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री के निर्देशन में पण्डित सुबोधजी शास्त्री शाहगढ़, पण्डित प्रयंकजी शास्त्री रहली, पण्डित श्रेयांसजी शास्त्री अभाना एवं पण्डित कांतिकुमारजी इन्दौर ने सम्पन्न कराये।

इस अवसर पर पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा इन्दौर, पण्डित अनिलकुमारजी शास्त्री भिण्ड, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर एवं पण्डित मनीषजी शास्त्री रहली के प्रवचनों का लाभ मिला।

३. कोलकाता (पं.बं.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में श्री महावीर जिनमंदिर में पंचमेरु नन्दीश्वर विधान का आयोजन हुआ।

इस अवसर पर ब्र. कैलाशचन्दजी 'अचल' ललितपुर के मार्मिक प्रवचन हुये। तथा प्लास्टर ऑफ पेरिस द्वारा निर्मित पंचमेरु नन्दीश्वर द्वीप की रचना को पण्डित अशोकजी शास्त्री ने समझाया। विधि-विधान के कार्य पण्डित अभिनयजी शास्त्री, जबलपुर ने कराये।

४. अजमेर (राज.) : यहाँ श्री वीतराग-विज्ञान स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट अजमेर के तत्त्वावधान में श्री योगसार मण्डल विधान का आयोजन हुआ।

विधान का उद्घाटन श्री प्रदीपकुमारजी चौधरी परिवार किशनगढ़ ने किया।

इस अवसर पर पण्डित जयकुमारजी जैन बांरा के विधान की जयमाला, मोक्षमार्गप्रकाशक एवं समयसार पर सारगर्भित प्रवचन हुये। विधि-विधान के कार्य पण्डित सुनीलजी 'धवल' भोपाल के निर्देशन में स्थानीय संगीत मण्डली ने कराये।

5. रतलाम (म.प्र.) : यहाँ श्री दि. जैन मंदिर में पण्डित कमलचन्दजी जैन पिड़ावा के ४७ शक्तियों पर मार्मिक प्रवचन हुये। साथ ही पण्डित पदमकुमारजी अजमेरा के प्रवचनों का लाभ मिला।

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न

भुज (गुज.) : यहाँ श्रीमद् राजचन्द्र साधना केन्द्र कुकुमा भुज में तीर्थधाम मंगलायतन के निर्देशन में दिनांक २० से २६ फरवरी, २००७ तक श्री महावीरस्वामी दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव सानन्द सम्पन्न हुआ।

इस प्रसंग पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर के पंचकल्याणक महोत्सव पर प्रासंगिक प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित हेमन्तभाई गाँधी, बाल ब्र. आत्मानंदजी कोबा, श्री राकेशजी जबेरी, पण्डित आलोकजी शास्त्री कारंजा एवं श्री पूर्णरत्नजी के प्रवचनों का लाभ मिला।

सम्पूर्ण प्रतिष्ठा महोत्सव प्रतिष्ठाचार्य बाल ब्र. पण्डित अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियांधाना के प्रतिष्ठाचार्यत्व एवं श्री पवनजी जैन मंगलायतन व पण्डित अशोकजी लुहाडिया मंगलायतन के निर्देशन में पण्डित संजयजी शास्त्री जेवर, पण्डित ऋषभजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, पण्डित मनीषकुमारजी शास्त्री पिड़ावा आदि के सहयोग से सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट से प्रकाशित लगभग १८ हजार रुपयों का सत्साहित्य एवं डॉ. भारिल्ल के प्रवचनों की ८५६० घण्टों की सी.डी. कैसिट्स घर-घर पहुँची। ●

छपकर तैयार

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि १० माह के अल्पकाल में ही डॉ. भारिल्ल कृत समयसार की ज्ञायकभावप्रबोधिनी टीका की ६ हजार प्रतियाँ व पश्चात्ताप की १० हजार प्रतियाँ समाप्त हो गई हैं और अब ज्ञायकभावप्रबोधिनी टीका का ४ हजार का और पश्चात्ताप का ५ हजार का तीसरा संस्करण छपकर तैयार है।

सम्पादकीय –

ये तो सोचा ही नहीं

– रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे ...)

ज्ञानेश के उस उपदेश ने मेरी तो आँखे खोल दीं। मेरे तो जितने भी निजी ट्रस्ट हैं, उन सबके पीछे मेरे व्यक्तिगत स्वार्थ जुड़े हैं। सचमुच मेरे ये कार्य शुभभावों की कोटि में भी नहीं आयेंगे, धर्म की बात तो बहुत दूर रही।

अनाथालय, विधवाआश्रम और महिला कल्याण केन्द्रों में रहनेवाले अनाथों को स्वावलम्बी बनाने के बजाय और उनका सही तरीके से भरण–पोषण करने के बजाय उनका शारीरिक, आर्थिक व मानसिक रूप से शोषण की ओर मेरा ध्यान ही नहीं गया।

यदि ये ट्रस्ट और संस्थाएँ सही ढंग से चलते रहें, अपने–अपने पावन उद्देश्यों की पूर्ति करते रहें तो शुभभाव होने से पुण्यबंध के कारण बनते हैं। जब तक वीतराग धर्म की प्राप्ति न हो सके। तबतक निस्वार्थ भाव और पावन उद्देश्य से ये ही कार्य करने योग्य है।

ज्ञानेश के ऐसे युक्तिसंगत और क्रान्तिकारी विचारों को स्मरण करते हुए सेठ लक्ष्मीलाल ने कहा ह्न ''ज्ञानेश के प्रवचनों से मेरा जीवन तो सुधरा ही, अन्य नवागंतुक श्रोता भी प्रभावित हुए तथा विराग के साथ आया उसका अनुज अनुराग का जीवन भी आमूलचूल बदल गया।''

एक बार की बात है ह्न अहिंसा के पुजारी के रूप में प्रसिद्ध एक बहुत बड़े राजनेता जिन्होंने पशुवध बन्द करने का आन्दोलन छेड़ रखा था और जिन्हें इस बात का गर्व था कि 'मैं जीवों की रक्षा करता हूँ, कर सकता हूँ' एक बार प्रसंगवश ज्ञानेश की सभा में पहुँच गये। संयोग से उस समय ज्ञानेश का व्याख्यान भी अहिंसा पर हो रहा था। वे कह रहे थे ह्न **''जो ऐसा मानता है कि ह्न मैं किसी को बचाता हूँ, बचा सकता हूँ, वह मूढ है, अज्ञानी है।''**

ज्ञानेशजी के भाषण का उक्त अंश सुनकर नेताजी को पहले तो बहुत ही अटपटा लगा, लगना ही चाहिए था; परन्तु जब पूरा व्याख्यान सुना तो वे अहिंसा की गहराई को समझकर बहुत ही प्रभावित हुए और उन्होंने दूसरे दिन भी प्रवचन सुनने की भावना प्रकट की।

नेताजी ने मुस्करा कर अपने साथी–सहयोगियों से कहा ह्न 'मैं उन संत का व्याख्यान पुनः सुनना चाहता हूँ जो मुझे कल मूढ़ कह रहे थे। 'सचमुच, कोई किसी को मार–बचा नहीं सकता है ? हम तो झूठा अहंकार ही करते हैं। हाँ, हमारे मन में मूक प्राणियों के प्रति जो दया का भाव या निर्दयता का भाव होता है; उससे पुण्य–पाप–बन्ध होता है।' उस संत की यह बात शत–प्रतिशत सत्य है। तुलसीदासजी ने भी तो यही कहा है ह्न **''हानि–लाभ जीवन–मरण, सुख–दुःख विधि के हाथ।''**

अर्थात् जीवन में जो आर्थिक हानि–लाभ, जीवन–मरण और सुख–दुःख होते देखे जाते हैं, वे सब अपने–अपने पूर्वकृत पुण्य–पाप कर्मों के फल में ही होते हैं, इन अनुकूल–प्रतिकूल परिस्थितियाँ पैदा करना किसी अन्य व्यक्ति के हाथ में नहीं है। अन्य व्यक्ति तो निमित्त मात्र बनते हैं। वे कर्त्ता–धर्त्ता नहीं हैं।

इसप्रकार जो भी ज्ञानेश को सुनता, प्रभावित हुए बिना नहीं रहता। ज्ञानेश को भी इस बात का संतोष था कि अध्यात्म की बात जन–जन तक पहुँच रही है। लोग अपने शुभ–अशुभ भावों को पहचान कर उस पर गंभीरता से विचार करते हैं कि ह्न मेरे जो शुभ–अशुभ भाव होते हैं, इनका फल क्या होगा? हमने ये तो सोचा ही नहीं। यदि ज्ञानेश का सत्समागम न मिलता हो। हमें यह सन्मार्ग कैसे मिलता?

सफलता का रहस्य

विद्याश्रम में चल रहे शिक्षण–शिविर के समापन के अवसर पर ज्ञानेशजी के उपकारों का उल्लेख करते हुए शिविर संचालक श्री लाभानन्द ने कहा ह्न ''चींटी की चाल चलनेवाला व्यक्ति भी यदि सही दिशा में चल रहा हो तो देर–अवेर ही सही, पर कभी न कभी तो वह अपने लक्ष्य को प्राप्त कर ही लेता है। इसके विपरीत गरुड़ पक्षी की भाँति हवा की चाल चलनेवाला व्यक्ति भी यदि विपरीत दिशा में चल पड़े या प्रमाद में ही पड़ा रहे, चले ही नहीं तो वह कभी भी अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पाता।

भले ही ज्ञानेशजी बाल्यकाल से धर्म के क्षेत्र में चींटी की चाल चले, पर अविरल रूप से सही दिशा में चलते रहने से प्रौढ़ होते–होते अपने स्व–विवेक के सहारे संसार के टेढ़े–मेढ़े रास्तों को पार करके आखिर अपने लक्ष्य की सीमा तक पहुँच ही गये।''

ज्ञातव्य है, कार्य की सफलता में स्वयं का उत्साह, लगन, सम्पूर्ण समर्पण, सक्रियता और आत्मविश्वास का होना अनिवार्य है। इनके सिवाय सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण होता है नैतिक सिद्धान्तों पर टिके रहना, समस्याओं के समाधान स्वयं खोजना तथा सही दिशा में पुरुषार्थ करना ।

भली होनहार से ज्ञानेशजी को माता–पिता भी ऐसे संस्कारी और सरल स्वभावी मिले जो ज्ञानेश को स्वतंत्र निर्णय लेने में बाधक बिल्कुल नहीं बने। उन्होंने अपने पुत्रव्यामोह को अपने विवेक पर हावी नहीं होने दिया। समय–समय पर प्रसन्नता प्रगट करके ज्ञानेशजी की धार्मिक, सामाजिक और व्यापारिक गतिविधियों को प्रोत्साहित ही किया।

लाभानन्द ने अपने भाषण में आगे कहा ह्न ''ज्ञानेशजी यदि अपने अन्तर्मुखी उग्र पुरुषार्थ द्वारा अपने कर्तव्य पथ पर अडिग नहीं रहते, अपने दृढ़ संकल्प में अविचलित नहीं रहते तो कहीं भी भटक सकते थे। क्या–क्या संकट नहीं झेले उन्होंने ? कैसे–कैसे प्रतिकूल प्रसंग आये उनके सामने, फिर भी वे अपने लक्ष्य से विचलित नहीं हुए।

सच है विचारवान और कर्तव्य–परायण व्यक्ति अपने गन्तव्य पथ में आये सुख–दुख की परवाह नहीं करते।''

आयोजन के विशिष्ठ अतिथि के रूप बोलते हुए सेठ लक्ष्मीलाल ने अपने वक्तव्य में कहा ह्न ''यद्यपि गृहस्थावस्था में आवश्यकतानुसार धनादि के संग्रह करने का निषेध नहीं, फिर भी उसके प्रति आसक्ति का निषेध तो है ही। मैं तो इसे ही सर्वस्व समझे बैठा था; ज्ञानेशजी ने एक बार ठीक ही

(शेष पृष्ठ ५ पर ...)

तार : त्रिमूर्ति फोन : 2707458, 2705581, (Fax) 2704127, E-mail : ptstjaipur@yahoo.com

(श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट मुम्बई द्वारा संचालित)

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय

ए–4, बापूनगर, जयपुर – 302015 (राज.)

यहाँ पासपोर्ट साइज का नवीनतम फोटो लगावें।

प्रवेश प्रार्थना–पत्र

(नोट : प्रार्थना–पत्र प्रार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये। सभी पूर्तियाँ सही–सही व पूरी होनी चाहिये।)

कक्षा ..... सत्र .....

नाम छात्र ..... पिता का नाम श्री ..... स्थान .....

आयु ..... जन्म तिथि .....पिता या संरक्षक की आजीविका (व्यापार)..... मासिक आय .....

परिवार में कितने व्यक्ति हैं ? ..... भाई .....बहिन ..... अन्य .....

कभी आपको कोई बड़ी बीमारी हुई हो या अभी हो तो विवरण दें .....

मातृभाषा ..... कोई अन्य भाषा जिसका ज्ञान हों .....

विद्यालय का नाम जहाँ से अन्तिम परीक्षा* उत्तीर्ण की है .....

बोर्ड/विश्वविद्यालय का नाम (अन्तिम परीक्षा दी हो).....

अंतिम परीक्षा के लिये हुए विषय 1. ..... 2. ..... 3. .....4. ..... 5..... परिणाम ..... प्रतिशत.....

धार्मिक परीक्षा दी हो तो उसका विवरण दें (प्रमाणपत्र संलग्न करें) .....

मैंने विद्यालय एवं छात्रावास के प्रवेश संबंधी नियमों को पढ़कर समझ लिया है। मैं उनका तथा समय–समय पर संशोधित, परिवर्द्धित, परिवर्तित नियमों व अन्य दी गई सूचनाओं का पूर्ण रीति से पालन करूँगा, यदि इसके विरुद्ध चलूँ या अनुशासन भंग करूँ या संस्था के हित में बाधक समझा जाऊँ या परीक्षा में अनुत्तीर्ण रहूँ तो मुझे संस्था से पृथक् करने तक का दण्ड दिया जा सकता है, वह मुझे बिना आपत्ति किये मान्य होगा। मुझे विद्यालय एवं छात्रावास में प्रवेश दिया जाये।

पत्र–व्यवहार का पूरा पता : ..... हस्ताक्षर छात्र

..... दिनांक .....

पिनकोड ..... फोन नं. (एस.टी.डी. कोड सहित) .....

पिता या संरक्षक द्वारा भरा जाये

1. यह छात्र रिश्ते में मेरा ..... है। 2. मुझे विद्यालय एवं छात्रावास के सम्पूर्ण नियम स्वीकार हैं।

मैं स्वेच्छा से इस छात्र को प्रवेश दिलाना चाहता हूँ तथा प्रमाणित करता हूँ कि छात्र का उपर्युक्त लिखना सही है। यह संस्था के वर्तमान नियमों, समय–समय पर बनने वाले अन्य नियमों, सूचनाओं और अनुशासन का बराबर पालन करेगा तथा विरुद्ध चलने पर अधिकारियों द्वारा दिया हुआ दण्ड मान्य करेगा। छात्र की सभी गतिविधियों के लिए मैं जिम्मेदार रहूँगा।

नाम व पूरा पता : ..... हस्ताक्षर (पिता या संरक्षक)

..... दिनांक .....

छात्र के निवास स्थान के दो प्रतिष्ठित व्यक्तियों का प्रमाणीकरण

हम प्रमाणित करते हैं कि छात्र और उसके पिता या संरक्षक ने जो ऊपर लिखा है वह सही है। छात्र विद्यालय और छात्रावास में प्रविष्ट होने योग्य है।

नाम ..... नाम .....

पता ..... पता .....

....

हस्ताक्षर हस्ताक्षर

दिनांक ..... दिनांक .....

नोट : प्रवेश संबंधी आवश्यक नियम कृपया पीछे देखें। *अन्तिम परीक्षा से आशय उस परीक्षा से है जिसके बाद आप विद्यालय में प्रवेश लेना चाहते हैं।

प्रवेश सम्बन्धी योग्यता एवं आवश्यक नियम

1. विद्यालय एवं छात्रावास में माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर (राजस्थान) के जैनदर्शन सहित उपाध्याय पाठ्यक्रम (हायर सैकण्डरी समकक्ष) एवं राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर के जैनदर्शन शास्त्री पाठ्यक्रम (त्रिवर्षीय स्नातक बी.ए. समकक्ष) में अध्ययन हेतु दिगम्बर जैनधर्म में श्रद्धा रखने वाले छात्रों को प्रवेश दिया जाता है।

2. महाविद्यालय का सत्र जून के अन्तिम सप्ताह से आरम्भ होता है। प्रत्येक वर्ष के लिए नया प्रवेश लेना आवश्यक है। कृपांक (ग्रेस) से उत्तीर्ण छात्रों का प्रवेश नहीं हो सकेगा।

3. उपाध्याय कक्षा में प्रवेश हेतु सैकण्डरी (10 वीं बोर्ड) या उसके समकक्ष या उच्च परीक्षा पास **18 वर्ष से कम उम्र के छात्र ही** प्रवेश पा सकेंगे। सैकण्डरी परीक्षा में सम्पूर्ण विषय (हिन्दी, अंग्रेजी, विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान) सहित उत्तीर्ण होना आवश्यक है।

4. प्रवेश हेतु साक्षात्कार के लिए छात्र को पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा आयोजित ग्रीष्मकालीन शिक्षण–प्रशिक्षण शिविर में पूरे दिन उपस्थित रहकर प्रशिक्षण प्राप्त करना आवश्यक है। **इस वर्ष यह शिविर दिनांक 8 मई से 25 मई, 2007 तक देवलाली (नासिक), महाराष्ट्र में आयोजित होगा।**

5. प्रवेश की स्वीकृति/अस्वीकृति की सूचना छात्र को जून–द्वितीय सप्ताह तक भेजी जावेगी। संस्था अस्वीकृति का कारण बताने को बाध्य नहीं है।

6. छात्र को विद्यालय द्वारा निर्दिष्ट दिनचर्या का पालन करना व उक्त पाठ्यक्रम के साथ विद्यालय द्वारा निर्धारित धार्मिक पाठ्यक्रम पढ़ना अनिवार्य है।

7. छात्र को प्रतिदिन देवदर्शन करने, छना हुआ पानी पीने, रात्रि भोजन–धूम्रपान नहीं करने, गुटखा तथा अभक्ष्य पदार्थ नहीं खाने का नियम रखना होगा।

8. छात्र को सम्बन्धित अधिकारियों द्वारा निर्दिष्ट स्थान पर ही रहना आवश्यक होगा। अपनी इच्छा से स्थान परिवर्तन नहीं किया जा सकेगा, छात्र अपने कमरे में धार्मिक वातावरण रखेंगे, अपने कमरे व उसके आस–पास के स्थान को स्वच्छ रखेंगे व बाथरूम आदि में गंदगी नहीं करेंगे।

9. छात्र अपने अतिथि को पूर्व स्वीकृति प्राप्त करके ही निर्दिष्ट स्थान पर ठहरा सकेंगे।

10. प्रत्येक कमरे में छात्र द्वारा ट्यूब लाईट एवं पंखें के अलावा हीटर, सिगड़ी, रेडियो, टेप, मोबाइल आदि का प्रयोग करना दण्डनीय अपराध होगा।

11. कोई भी छात्र नकदी या अन्य जोखिम अपने पास नहीं रखेगा, अन्यथा खो जाने पर उसकी स्वयं की ही जिम्मेदारी होगी। नकदी आदि कार्यालय में जमा कराके रसीद प्राप्त कर लेना चाहिए।

12. धार्मिक अध्ययन से प्रत्यक्ष में उपेक्षा दिखाने वाले, बिना पर्याप्त कारण के परीक्षा में अनुपस्थित रहने वाले या अनुत्तीर्ण रहने वाले, अनुशासन भंग करने वाले छात्रों को बिना किसी पूर्व सूचना के तत्काल छात्रावास से निष्कासित किया जा सकेगा। वार्षिक परीक्षा में पास न होने वालों को सामान्यत: अगले वर्ष छात्रावास में प्रवेश नहीं मिलेगा। इस बारे में विद्यालय एवं छात्रावास अधिकारी का निर्णय ही अंतिम होगा व उसके लिए अपने निर्णय का कारण बताना आवश्यक नहीं होगा।

13. किसी भी कारण से छात्रावास से बाहर जाने हेतु संबंधित अधिकारी से अनुमति प्राप्त करना आवश्यक है। सत्र के बीच में अवकाश पर जाने के लिए प्रार्थना–पत्र देकर तीन दिन पूर्व लिखित स्वीकृति प्राप्त करना आवश्यक है। ग्रीष्मावकाश में कोई भी छात्र बिना अनुमति छात्रावास में नहीं रह सकेगा।

14. छात्रावास के बाहर छात्र के साथ घटित किसी भी घटना–दुर्घटना के लिये तथा छात्र द्वारा किये गये कृत्य के लिये वह स्वयं जिम्मेदार होगा, महाविद्यालय की किसी भी प्रकार की जिम्मेदारी नहीं होगी।

15. साथ ही समय–समय पर संशोधित, परिवर्द्धित एवं परिवर्तित नियमों का एवं अन्य आदेशों का छात्र को पूर्णरुपेण पालन करना होगा।

उपर्युक्त नियम हमें पूर्ण मान्य हैं।

हस्ताक्षर छात्र ..... **हस्ताक्षर पिता/संरक्षक .....**

प्रवेश प्रक्रिया

1. प्रवेश प्रार्थना–पत्र छात्र स्वयं भरकर माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की सैकण्डरी परीक्षा (दसवी) तथा यदि उपलब्ध न हो तो नौवी की अंकसूची की सत्यापित प्रतिलिपि सहित 30 अप्रैल तक जयपुर कार्यालय में भेजें, तत्पश्चात् प्रशिक्षण–शिविर में प्रत्यक्ष उपस्थित होकर जमा करा सकते हैं।

2. छात्रों को संस्था द्वारा आयोजित शिविर में प्रशिक्षण एवं साक्षात्कार (इन्टरव्यू) के लिए पूरे दिन उपस्थित रहना आवश्यक है। **इस वर्ष यह शिविर दिनांक 8 मई से 25 मई 2007 तक देवलाली–नासिक (महा.) में आयोजित होगा।** प्रशिक्षण शिविर के दौरान ही छात्र के परीक्षाफल का प्रतिशत, प्रतिभा, चाल–चलन, धार्मिक रुचि व साक्षात्कार के आधार पर विद्यालय में प्रवेश हेतु छात्र का चयन किया जायेगा।

3. प्रवेश प्राप्ति की सूचना मिलने पर निर्दिष्ट तिथि को जयपुर आना अनिवार्य है।

प्रवेश–स्वीकृति पत्र

छात्र..... पिता श्री ..... को सत्र .....

हेतु कक्षा ..... में प्रवेश स्वीकृत/अस्वीकृत किया जाता है।

दिनांक : **ह. महामंत्री .....** **ह. प्राचार्य .....**

(पृष्ठ २ का शेष ...)

कहा था कि यदि इस धन–दौलत के संग्रह करने में और इन्द्रियों के विषयों में आनन्द मानने रूप पापभावों में ही जीवन चला गया तो निश्चित ही नरक के दु:ख भोगने होंगे। अत: जीवन के रहते इनसे ममत्व कम करके शीघ्र ही आत्मा–परमात्मा की शरण में पहुँचना होगा। सचमुच यह भौतिक उपलब्धि कोई उपलब्धि नहीं है। उनके इस कथन से मेरी आँखें ही खुल गईं।''

सेठ लक्ष्मीलाल ने भौतिक उपलब्धि की निरर्थकता का बोध करानेवाली एक बोधकथा भी कही थी ह्न जो इसप्रकार है ह्न

स्वामी विवेकानन्द नदी के किनारे खड़े नौका की प्रतीक्षा कर ही रहे थे कि ह्न एक सन्त ने आकर उनसे पूछा ह्न 'आप यहाँ बहुत देर से खड़े–खड़े किसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं ?'

विवेकानन्द ने कहा ह्न 'मैं नौका की प्रतीक्षा कर रहा हूँ।'

सन्त ने बड़े गर्व से कहा ह्न 'इतने बड़े सन्त होकर इस दो टके के नाविक के आधीन हो ! मेरी भांति पानी के ऊपर चलने की साधना करके स्वाधीन क्यों नहीं हो जाते ?''

इतना कहकर सन्त गर्व से सीना ताने पानी पर चलकर कुछ ही क्षणों में नदी के उस पार पहुँच गये। पुन: पानी पर चलकर ही वापिस आए और विवेकानन्द के सामने अहंकार की मुद्रा में खड़े हो गये।

स्वामी विवेकानन्द ने पूछा ह्न 'महात्मन् ! आपको इस भौतिक उपलब्धि की साधना में कितना समय लगा ?'

सन्त का उत्तर था ह्न 'पूरे बारह वर्ष।'

विवेकानन्द ने कहा ह्न 'जो काम एक–दो रुपया में हो सकता है उसके लिए आपने जीवन के अमूल्य बारह वर्ष खो दिए। यदि इन बारह वर्षों में आत्मा–परमात्मा की साधना–आराधना करते तो आप परमपद पर प्रतिष्ठित होते। यह भौतिक उपलब्धि भी कोई उपलब्धि है ? इससे आपको जो अहंकार हो गया, जानते हो अहंकार का फल क्या होगा ?''

स्वामी विवेकानन्द की उक्त बोधकथा से सेठ लक्ष्मीलाल ने स्वयं तो यह सबक सीखा ही कि अपने जीवन का क्रीम टाइम खोकर नैतिक/अनैतिक तरीकों से अपने भोग–विलास और नाम के लिए करोड़ों रुपया कमा लेना कोई उपलब्धि नहीं है। हमें अपने अमूल्य समय और न्यायोपात्त धन का निस्वार्थ भावना से जनहित के कामों में ही सदुपयोग करना चाहिए।

अन्त में अपने अध्यक्षीय भाषण में ज्ञानेशजी ने सफल व्यापारी की तुलना भ्रामरी वृत्ति और सिंह वृत्ति से की। उन्होंने कहा ह्न ''जिसतरह भौंरा फूलों को हानि पहुँचाये बिना उसका रस चूसता है, सिंह पेट भरने के बाद अनावश्यक शिकार नहीं करता, भले ही उसके चारों ओर हिरण आदि पशु घूमतें रहें। इसी तरह सफल व्यापारी ग्राहक को हानि पहुँचायें बिना उचित मुनाफा ही लेता है।

असफल व्यापारी की तुलना हम गिद्ध और बाघ से कर सकते हैं। जिसतरह बाघ पेट भर जाने के बाद भी क्रूर और हिंसक प्रवृत्ति के कारण पशुओं का शिकार कर–करके लाशें बिछा देता है, उसीतरह असफल व्यापारी नीति–अनीति की परवाह न कर पेट भरने के बाद भी पेटी भरने के लालच में संग्रह करता ही रहता है। यही परिग्रहानन्दी रौद्रध्यान है।''

सेठ लक्ष्मीलाल की ओर संकेत करते हुए ज्ञानेशजी ने मजाक के मूड़ में कहा ह्न हम अभी तक लक्ष्मीलाल बनकर उसकी सेवा ही करते रहे अब ह्न ''हमें पुण्य और पुरुषार्थ से प्राप्त लक्ष्मी का लाल नहीं उसका कान्त बनना है, उसका सेवक नहीं स्वामीपना है। लक्ष्मीकान्त बनकर लक्ष्मी का सत्कार्यों में सही–सही उपयोग करना है।

देखो, हम लोगों ने वर्तमान में हो रहे अपने भावों की समीक्षा द्वारा आर्त–रौद्र रूप खोटे भावों को दृष्टि में रखते हुए विचार–विमर्श किया, अपनी वर्तमान शुभ–अशुभ परिणति को समझने की कोशिश की तथा संसार–सागर में डूबने की कारणभूत इस शुभाशुभ परिणति से मुक्त होने के उपायों पर भी संक्षेप में चर्चा की।

इसीप्रकार अपने ज्ञान को आत्मकेन्द्रित करके हम काम–क्रोधादि विकारों को नष्ट कर सकते हैं। यह धर्मध्यान का सुफल है। इसतरह हम कह सकते हैं कि जिसप्रकार सूर्य की विकेन्द्रित किरणें जब लेंस के द्वारा केन्द्रित कर लीं जाती हैं तो उससे भोजन तो पक ही जाता है, सोलर आदि से पानी का टैंक भी गरम हो जाता है। उसीप्रकार जो व्यक्ति बहिर्मुखी मानसिक वृत्ति को अन्तर्मुखी बनाता है। पाँच इन्द्रियों व मन के द्वारा विकेन्द्रित ज्ञान किरणों को अन्तर्मुखी पुरुषार्थ से आत्मा पर केन्द्रित करता है। वह ज्ञान को केन्द्रित करने की प्रकिया ही धर्मध्यान है। आत्मज्ञान के बिना आत्मध्यान या धर्मध्यान संभव नहीं है और धर्मध्यान के बिना सच्चे ध्येय की प्राप्ति संभव नहीं है। ध्रुवधाम आत्मा के जानने का नाम सम्यग्ज्ञान है और उसे जानते रहने का नाम सम्यक्चारित्र है, निश्चय धर्मध्यान है ह्न ऐसे ध्यान से ही आत्मा पूर्ण पवित्र होकर पूर्णता की प्राप्ति कर लेता है, कर्मबंधन से मुक्त हो जाता है।

जबतक पूर्व परम्परागत कर्ताबुद्धि से पर में किसी प्रकार से परिवर्तन करने/कराने की मान्यता या सोच रहेगा, तबतक मन की वृत्ति/प्रवृत्ति पर नियंत्रण संभव नहीं है। ये तो अब तक सोचा ही नहीं।''

शिविर के समापन पर 'ध्यान' विषय का उपसंहार करते हुए ज्ञानेशजी का जो भाषण हुआ, उससे सभी श्रोताओं के स्मृति–पटल पर चलचित्र के चित्रपट की भाँति पूरे शिविर में चर्चित विषय प्रतिबिम्बित हो गये।

सभी श्रोताओं ने मन ही मन अपने ज्ञान–गुरु ज्ञानेशजी का धन्यवाद ज्ञापन करते हुए और उनके स्वास्थ्य एवं दीर्घजीवन की मंगल कामना करते हुए अगले शिविर की सूचना के साथ अन्त में राष्ट्र गीत की ध्वनि प्रसारित की गई। **समाप्त**

वैराग्य समाचार

गुढ़ा (उ.प्र.) निवासी श्री सुन्दरलालजी जैन का ७८ वर्ष की आयु में शान्तपरिणामों से देहावसान हो गया है। आपको तत्त्वज्ञान की गहन रुचि थी।

आप श्री टोडरमल सिद्धा. महाविद्यालय के स्नातक एवं लोक शिक्षण संस्थान म.प्र. के सहा.संयोजक डॉ. महेशजी जैन भोपाल के पिता थे।

दिवंगत आत्मा शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हो यही भावना है।

तत्त्वचर्चा

छहढाला का सार ०३

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे ...)

हमारी समझ में यही आता है कि हम रोजाना दो रोटियाँ खाते हैं और हमारी भूख शान्त हो जाती है और जिस दिन हमें दो रोटियाँ नहीं मिले तो हम तड़प उठते हैं। दो रोटियाँ नहीं मिलने का दु:ख कितना होता है और उससे अंदाज लगाओ की तीन लोक के अनाज का दु:ख कितना होगा ? यह कोई ऐसी बात नहीं है कि आप रिसर्च करने बैठ जायें कि कहाँ-कहाँ अनाज पैदा होता है ?

आपको दो रोटी की भूख है, किसी को दस रोटी की है; लेकिन दो वाले को दो नहीं मिले और दस वाले को दस नहीं मिले तो दोनों का दु:ख बराबर ही होता है। हमारे इस जगत के जो जीव हैं, उनको यह समझ में ही नहीं आता। उनको तो सिर्फ खाने में सुख और खाना नहीं मिलने में दु:ख ह्न यही समझ में आता है; इसलिए उनको उन्हीं की भाषा में समझाया है। प्यास लगती है तो बहुत तकलीफ होती है। एक गिलास ठंडा पानी मिल जाये तो प्यास बुझ जाती है। उन्होंने कहा ह्न

सिन्धु नीरतैं प्यास न जाय, तो पण एक न बूँद लहाय।

समुद्र का सारा पानी पी जाये तो भी प्यास नहीं बुझै। यहाँ यह बता रहे हैं कि भूख-प्यास के दु:ख से तुम परिचित हो, और जिन दु:खों से तुम परिचित हो, उससे तुम्हें अनुमान लगाना है, बस।

इसप्रकार के अनन्त दु:ख अनेक सागरों पर्यन्त सहन किये।

मनुष्यगति में भी माँ के पेट में रहना, बचपन, जवानी और बुढ़ापे में होनेवाली अनेक प्रतिकूलताओं के दु:ख ही दु:ख भोगे।

इसप्रकार कहानी चलती रही, नरक में गया, मनुष्य हुआ और फिर भवनवासी, व्यन्तर और ज्योतिषी देव हो गया तो भी सुख की प्राप्ति नहीं हुई। और अन्त में ह्न

जो विमानवासी हूँ थाय, सम्यग्दर्शन बिन दुख पाय।

यदि विमानवासी भी हो गया अर्थात् ऊपर के स्वर्गों में चला गया, तो भी सम्यग्दर्शन के बिना दु:खी ही रहा।

नववें ग्रैवेयक में गया तो भी सुखी नहीं हुआ। कहा भी है ह्न

अंतिम ग्रीवकलौं की हद, पायो अनन्त विरिया पद।
पर सम्यग्ज्ञान न लाधो, दुर्लभ निज में मुनि साधो।।

यह जीव पंचपरावर्तन करते हुये अनन्त बार नौवें ग्रैवेयक तक गया, अहमिन्द्र पद पाया; किन्तु सम्यग्ज्ञान की प्राप्ति नहीं हुई। इसलिये अनन्त दु:ख उठाये।

भवनवासी, व्यन्तर और ज्योतिषी तो मध्यलोक और अधोलोक में रहते हैं। स्वर्गों में ऊपर सोलह स्वर्ग, फिर नौ ग्रैवेयक, फिर नौ अनुदिश, फिर पाँच अनुत्तर हैं, उसके ऊपर सिद्धशिला है।

नवमें ग्रैवेयक में इस जीव ने ३१ सागर की आयु पाई, सभी प्रकार की अनुकूलतायें प्राप्त कीं, लेकिन सम्यग्दर्शन नहीं हुआ तो वहाँ भी सम्यग्दर्शन के बिना दु:ख ही दु:ख भोगा।

वहाँ ३१ हजार वर्ष तक मन में खाने का विकल्प भी नहीं आता। ३१ हजार वर्ष बाद जब विकल्प आता है तो गले से अमृत झर जाता है, जबान झूठी तब भी नहीं होती। ऐसी स्थिति है फिर भी यहाँ कह रहे हैं कि वहाँ पर अनन्त दु:ख पाया।

प्रवचनसार के ज्ञानतत्त्वप्रज्ञापन महाधिकार में एक सुखाधिकार है। उसमें लिखा है ह्न चक्रवर्ती, इन्द्र और नागेन्द्र ह्न सभी दु:खी हैं।

यद्यपि वे सभी को बहुत सुखी दिखाई देते हैं; तथापि वे चौबीसों घंटे भोगों में मग्न रहते हैं; अत: दु:खी ही हैं।

यह तो आप जानते ही हैं कि चक्रवर्ती की पट्टरानी मासिक धर्म से नहीं होती, उसके बाल-बच्चे भी नहीं होते; क्योंकि यदि वह मासिकधर्म से हो, उसके बच्चे हों तो चक्रवर्ती के भोगों में बाधा पड़ेगी। चक्रवर्ती इतना पुण्यशाली होता है कि उसे निर्बाध भोगों की प्राप्ति होती है।

देखो, ऐसे चक्रवर्ती को यहाँ दु:खी कह रहे हैं ? सारी विभूति मौजूद है, छह खंडों का मालिक है, छियान्नवे हजार पत्नियों का पति है; फिर भी दु:खी।

यदि वे दु:खी नहीं हैं तो इन पाँच इन्द्रियों के विषयों में क्यों रमे हैं ? प्रवचनसार गाथा-६३ में लिखा है ह्न

नरपती, सुरपति, असुरपति, इन्द्रियविषय दवदाह से।
पीड़ित रहें सह सके ना रमणीक विषयों में रमें।।

उन्हें पाँच इन्द्रियों के विषयों को भोगने की आकांक्षा है, उससे वे इतने पीड़ित हैं कि इन गंदे विषय-भोगों में चौबीसों घंटे लिप्त रहते हैं।

भगवान की दिव्यध्वनि छोड़कर भरत चक्रवर्ती लड़ाई लड़ने निकल गये, ९६००० शादियाँ करने निकल गये। यदि वे दु:खी नहीं हैं तो फिर यह सब क्यों, किसलिये ?

कोई कहे ह्न मैं कभी बीमार नहीं पड़ता; क्योंकि मेरे पास दवाइयों के दो बक्से और दो डॉक्टर हमेशा साथ चलते हैं। अरे भाई ! ये दवाइयों के बक्से और डॉक्टरों का साथ चलना बीमार नहीं पड़ने की निशानी है अथवा सदा बीमार रहने की निशानी है ? इसीप्रकार यह भोग सामग्री उनके सुखी होने की निशानी है या

दु:खी होने के निशानी है ?

आयुर्वेद में कहा गया है कि बकरे की पेशाब कान में डालो तो कान का दर्द ठीक हो जाता है। जब किसी के कान में दर्द नहीं हो, तब कोई उस कटोरे को छूने को भी तैयार नहीं होता; जिसमें यह पेशाब रखी हो। जब किसी के कान में भयंकर दर्द हुआ तो कहा गया कि यह बकरे की पेशाब है और कान में डालेंगे तो दर्द ठीक हो जायेगा; लेकिन यह समझ लो कि कान में डालोगे तो अकेले कान में ही नहीं रहेगी, गले में भी पहुँच जायेगी, मुँह में पहुँच जायेगी; क्योंकि अन्दर सब एक है, बाहर भले ही अलग–अलग दिखता हो। बोलो ह्न डाले कि नहीं डाले ? वह कहेगा ह्न देर क्यों करते हो ? जल्दी डाल दो न !

तात्पर्य यह है कि उसे भयंकर पीड़ा है, अन्यथा वह ऐसा अपवित्र पदार्थ कान में क्यों डलवाता ? इसीप्रकार इन्द्र और चक्रवर्ती भी दु:खी हैं, अन्यथा वे भोगों में लिप्त क्यों रहते ? यह भोगों की लिप्तता उनके दु:खी होने की निशानी है।

आचार्यदेव ने प्रवचनसार की टीका में उक्त उदाहरण स्वयं दिया है। उन्होंने तो पाँचों इन्द्रियों सम्बन्धी इसीप्रकार के पाँच उदाहरण दिये हैं।

खाने का मजा तो तब है, जब डटकर भूख लगी हो; तब रूखी–सूखी रोटी में भी मजा आता है। यदि भूख नहीं लगी हो तो बढ़िया से बढ़िया माल–मसाले भी अच्छे नहीं लगते। भोजन का आनन्द लेने के लिए भूख लगना जरूरी है। संयोग का आनन्द लेना है तो वियोग होना जरूरी है। वियोग के बिना संयोग का आनन्द नहीं आयेगा।

अब प्रश्न है कि डटकर भूख लगना सुख है या दु:ख ? खायेंगे तब तो सुखी हो जायेंगे; लेकिन जबतक नहीं खायेंगे, तबतक सुख हुआ या दु:ख ? यदि भूख का नाम दु:ख कहे तो जब थोड़ी लगे तो थोड़ा दु:ख और अधिक लगे तो अधिक दु:ख। इसप्रकार आठ घंटे दु:खी रहे और पाँच मिनिट सुखी हुये। खाने के बाद तो हम चूरन तलाशते फिरते हैं।

यदि कोई कहे कि खाते वक्त तो सुख हुआ।

उससे कहते हैं कि खाते वक्त भी एक कौर मीठे का खाते हैं, फिर तत्काल अगला ही कौर नमकीन का खाते हैं ह्न ऐसा क्यों ? नमकीन क्यों ? यदि मीठे में सुख है तो मीठा ही खाओ न।

नहीं, नमकीन खाकर जरा मुँह ठीक कर लूँ। इसका मतलब तो यह हुआ कि मीठा खाने से मुँह खराब हो गया। वह सुख हुआ अथवा दु:ख ? यदि नमकीन खाने से मुँह ठीक होता है तो फिर नमकीन ही नमकीन खाओ न ? फिर नमकीन, फिर मीठा ह्न इसप्रकार बदल–बदलकर जमकर खा–पी लिया और फिर कहता है कि अब सौंफ–सुपारी लाओ। यह किसलिए ? जरा मुँह ठीक हो जाये। जिस वस्तु के खाने के बाद मुँह ठीक करना पड़े; उसमें सुख कैसे हो सकता है ?

खाते वक्त भी कितना सुख हुआ है ह्न यह भी समझ लो। पसीना छूट रहा है ह्न यह सुख की निशानी है या दु:ख की है ? पसीने को शास्त्रों श्रमजल कहा है।

चारों गतियों में दु:ख ही दु:ख हैं, कहीं भी सुख नहीं है। नरक में सर्दी–गर्मी और भूख–प्यास के दु:ख, तिर्यंच गति में मारने–पीटने के दु:ख, मनुष्य गति बालपन और बुढ़ापे के दु:ख और देवगति में भी सम्यग्दर्शन के बिना दु:ख ही दु:ख हैं।

अरे भाई ! भूख–प्यास के दु:ख भोजन और पानी की कमी के कारण नहीं हैं, अपितु सम्यग्दर्शन नहीं होने के कारण हैं।

देखो ! मुनिराज जंगल में बैठे हैं, किसी व्यक्ति को आठ दिन से भोजन नहीं मिला और वह भूख से तड़प रहा है; पानी भी नहीं मिला, अत: प्यास से तड़प रहा है। वह महाराज के पास गया और बोला मुझे भूख लगी है, प्यास लगी है। मुनिराज कहें ह्न देख भाई ! तू दु:खी भोजन की कमी से नहीं, पानी की कमी से नहीं, सम्यग्दर्शन की कमी से है।

यह सुनकर उसे गुस्सा आयेगा; वह कहेगा मैं तो तुम्हारे पास पानी मांगने आया था, जो तुम्हारे कमंडलु में है और तुम मुझे उपदेश दे रहे हो।

ऐसा क्यों होता है ? आपके हिसाब से ऐसी स्थिति में मुनियों को क्या करना चाहिए ?

जो कमंडलु कभी मँजता नहीं है, जो शुद्धि के काम आता है; क्या तुम उस कमंडलु के पानी को पी सकते हो ? नहीं तो फिर वह पानी उसे कैसे पिलाया जा सकता है ?

आप कह सकते हैं कि वह प्यास से मरा जा रहा है, आपको जल शुद्ध–अशुद्ध दिख रहा है। जान बचाने की कीमत पर तो कुछ भी खाया–पिया जा सकता है।

अरे भाई ! मुनिराजों ने दिन और रात चिंतवन करके यह तत्त्व निकाला है कि जीव मिथ्यादर्शन के कारण दु:खी है, मिथ्याज्ञान के कारण दु:खी है, मिथ्याचारित्र के कारण दु:खी है और इनको मेटे बिना, सम्यग्दर्शन–ज्ञान–चारित्र को धारण किये बिना सुखी नहीं हो सकता, जन्म–मरण का अन्त नहीं हो सकता। इस बात का उनको पक्का श्रद्धान है। इसलिए वे इसी बात का उपदेश देते हैं। **(क्रमश:)**

१७ मार्च २००७, मूल्य : २/- आर. एन. आई. ३११०९/७७ RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

आध्यात्मिक शिक्षण शिविर सम्पन्न

भोपाल (म.प्र.) : श्री आदिनाथ जैन मंदिर पिपलानी में १५ फरवरी से ३ मार्च,०७ तक प्रथम आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर का आयोजन हुआ।

इस अवसर पर ब्र. यशपालजी जैन जयपुर द्वारा गुणस्थान विवेचन व जिनधर्म प्रवेशिका की मार्मिक कक्षा ली गई। आपके अतिरिक्त ब्र. हेमचन्दजी हेम द्वारा प्रवचनसार एवं श्री माणकचन्दजी जैन द्वारा छहढाला ग्रन्थ पर प्रवचन हुये। आपके अतिरिक्त ब्र. नन्हेभाईजी सागर, पण्डित अश्विनभाई शाह मुम्बई, ब्र. राजमलजी जैन भोपाल, डॉ. कपूरचन्दजी कौशल भोपाल, पण्डित कस्तूरचन्दजी विदिशा आदि विद्वानों के भी मार्मिक प्रवचन हुये।

शिविर में ब्र. यशपालजी जैन ने पं. टोडरमल स्मारक ट्रस्ट एवं यहाँ से प्रकाशित साहित्य की जानकारी दी, जिससे प्रभावित होकर साधर्मियों ने प्रवचनसार की कीमत कम करने हेतु १४१६७/- रुपये प्रदान किये।

दि. ३ व ४ मार्च को ब्र. यशपालजी के दो प्रवचन चौक मंदिर में हुये।

वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव सानन्द सम्पन्न

शिवपुरी (म.प्र.) : यहाँ छत्री रोड स्थित नवनिर्मित श्री शांतिनाथ मंदिर में २४ से २६ फरवरी, ०७ तक वेदी प्रतिष्ठा का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर सिद्धान्तसूरि पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल एवं वाणी भूषण पण्डित ज्ञानचन्दजी जैन के मार्मिक प्रवचनों से समाज लाभान्वित हुआ। विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित लालजीरामजी एवं डॉ. विनोद चिन्मय विदिशा ने सम्पन्न कराये।

दिनांक २६ फरवरी को श्री सर्वज्ञशरण, अभयकुमार, कैलाशचन्द, बच्चनलाल, सुरेशकुमार, अरुणकुमार जैन परिवार द्वारा वेदी पर मूलनायक श्री शांतिनाथ भगवान की प्रतिमा भक्तिभावपूर्वक विराजमान की गई।

साथ ही भगवान आदिनाथ एवं भगवान महावीरस्वामी की प्रतिमायें क्रमश: श्री भरत सुरेशचन्द जैन परिवार शिवपुरी एवं श्री सतीश जैन ठेकेदार परिवार ग्वालियर द्वारा विराजमान की गई। **- जयकुमार जैन**

मिलेनियम परसन ऑफ द ईयर से अलंकृत

ग्वालियर (म.प्र.) : ग्वालियर महानगरी की अग्रणी संस्था ग्वालियर विकास समिति द्वारा गणतंत्र दिवस को श्री नारायण सिंह कुशवाह मंत्री ह्न पंचायत एवं सामाजिक न्याय म.प्र. शासन द्वारा समाज सेवा में उत्कृष्ट कार्यों हेतु टॉप टेन ऑफ द ईयर में चयनित प्रतिभाओं में श्री शीतलप्रसाद जैन को मिलेनियम परसन ऑफ द ईयर से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर आपको शॉल, श्रीफल के साथ ११ हजार की नगद राशि के साथ प्रशस्ति पत्र दिया गया।

ज्ञातव्य है कि सामाजिक एवं धार्मिक संस्थाओं के माध्यम से नि:स्वार्थ भाव से समाज सेवा के कार्यों में अग्रणी होने से आपको पहले भी कई बार सम्मानित किया जा चुका है। जैनपथप्रदर्शक की ओर से हार्दिक बधाई !

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

छिन्दवाड़ा (म.प्र.) : यहाँ अहिंसा स्थली **गोलगंज** स्थित श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर का १३ वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक ११ फरवरी, ०७ को तथा नई आबादी **गाँधीगंज** स्थित श्री पार्श्वनाथ जिनमंदिर का तीसरा वार्षिकोत्सव २३ जनवरी, ०७ को धूमधाम से मनाया गया।

दोनों ही अवसरों पर प्रात: ध्वजारोहण के पश्चात् सामूहिक पूजन एवं पंचपरमेष्ठी विधान का आयोजन किया गया। सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति हुई।

इस अवसर पर शासकीय तिलक प्राथमिक शाला के १७० निर्धन छात्रों को यूनीफार्म तथा बालक आदिवासी छात्रावास के ७० बच्चों को गर्म कपड़े एवं मिष्ठान्न का वितरण ब्र.संवेगी धवलजी, अति.पुलिस अधीक्षक श्री के. सी. जैन, तरुण पाटनी, जिनेन्द्र जैन, संजीव सिंघई, दीपकराज जैन एवं रमेश सिंघई के करकमलों से किया गया।

इस प्रसंग पर पण्डित उत्तमचन्दजी सिवनी के मार्मिक प्रवचन हुये तथा रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये। **ह्न दीपकराज जैन**

शिविर सानन्द संपन्न

लूणदा (उदयपुर) : यहाँ होली के अवसर पर दो दिवसीय शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें ब्र. कल्पना बेन जयपुर, पण्डित खेमचंदजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित अभिषेकजी शास्त्री सिलवानी एवं पण्डित अंकितजी शास्त्री लूणदा के प्रवचनों का लाभ मिला। ज्ञातव्य है कि स्थानीय समाज के अतिरिक्त बाहर से पधारे हुए लोगों ने भी शिविर का लाभ लिया।

शुभ कामनायें !

१. अमरावती निवासी श्री प्रा.क.ध. मिश्रीकोटकर की ओर से दिनांक १० जनवरी, २००७ को आयु के ७५ वर्ष पूर्ण होने पर जैनपथप्रदर्शक समिति एवं वीतराग-विज्ञान को १५००/-रुपये प्राप्त हुये।

2. श्री मोहित तिलवाड़िया, जयपुर की ओर से उनके सुपुत्र हिमांक के जन्मदिवस पर जैन पथप्रदर्शक को 201/- रुपये प्राप्त हुए।

जैनपथ प्रदर्शक समिति की ओर से आप दोनों को शुभ कामनायें !

ह्न प्रबन्ध सम्पादक

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**,डबल एम.ए.जैनविद्या व धर्मदर्शन; इतिहास, नेट एवं **पण्डित जितेन्द्र वि.राठी**, साहित्याचार्य
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- ४ बापूनगर, जयपुर - ३०२०१५ (राज.)
फोन : (०१४१) २७०५५८१, २७०७४५८
फैक्स : (०१४१) २७०४१२७